प्रकाशन तिथि : 15 नवम्बर, 2022
प्रेषण तिथि : 19 नवम्बर, 2022

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 26 | अंक 17 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

श्रेष्ठता के साथ बढ़ता है दायित्व: संघप्रमुख श्री

(धोलेरा माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर में माननीय संघप्रमुख श्री द्वारा प्रदत्त विदाई उद्बोधन का संपादित अंश)

सात दिन पहले इसी स्थान पर, इसी सूर्योदय की बेला में हमारे इस भाल पर तिलक लगाकर स्वागत किया गया था और आज फिर केवल सात ही दिन में, जैसे सात पल बीते हों, हमें इस भाल पर पुनः तिलक लगाकर विदाई दी जा रही हैं। पहले दिन जब स्वागत किया गया था तो इन चेहरों को देखकर खुशी हुई थी और आज वही सूर्योदय की बेला है और हमारे चेहरे पर एक उदासी है। लेकिन इन चेहरों पर उदासी होते हुए भी एक तेजस्विता है और यह तेजस्विता आई है तपस्या में तप कर। कोई भी व्यक्ति यदि तप करेगा तो तेजस्विता आए बिना नहीं रहेगी। यह सनातन नियम है। हमने भी यहां पर सात दिन तक आकर एक साधना की थी और उस साधना के तप के द्वारा तेजस्विता लाने का प्रयास किया। आज उदास या निराश होने की बात नहीं है बल्कि जो कुछ भी हमने यहां सात दिनों में प्राप्त किया है उसको उजागर करने की आवश्यकता है। उसे इस संसार में, इस समाज में बिखेरने की आवश्यकता है। इस समाज में जो निराशा छा गई है, जिस पर हमने स्वागत के समय बात की थी कि समाज में एक अंधकार छा गया है, उस अंधकार को मिटाने के लिए एक प्रकाश की किरण जो हमारे हृदय में जगी है, जो एक तेज हमारे में उत्पन्न हुआ है, उस तेज को, उस प्रकाश को ले जाकर समाज को हम प्रकाशित करें तभी हमारी इस साधना की उपयोगिता है। साथियों! आज समाज और राष्ट्र विषम परिस्थितियों में जी रहा है। हम सभी लोग त्रेता काल में हुए राम और रावण के युद्ध को जानते हैं। यह घटना युगों पहले की है, लेकिन राम और रावण का युद्ध आज के युग में भी घट रहा है। हमको चाहे वह सम्मुख दिखाई नहीं दे रहा हो लेकिन मनुष्य के भीतर, उसके मन में इस प्रकार का राम और रावण का युद्ध चल रहा है। आज के समय में भी रावण की कमी नहीं है। मनुष्य के मन की क्षुद्र भावनाएं, मन का भ्रष्टाचार, स्वार्थ लोलुपता - यह सारे उस रावण के दस सिरों की तरह अपना मुंह खोले खड़े हैं। ऐसी परिस्थिति में हम सबका एक दायित्व बनता है कि हम राम बनकर खड़े हों। हमारा दायित्व बनता है कि हमने श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों में जिस तपस्या का अर्जन किया है, उस तपस्या के बल पर उस रावण को हम समाप्त करने की बात करें। आज पूरा संसार भ्रष्टाचार में, स्वयं के स्वार्थ में एक दूसरे को खाने के लिए दौड़ रहा है, परिवार भी बिखर रहे हैं। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

कर्त्तव्य का पालन ही है जीवन को सार्थक बनाने का उपाय: सरवड़ी

(श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा आईटी प्रोफेशनल्स की बैठक आयोजित)

हमारा समाज बहुत बड़ा है और समाज की आवश्यकताएं भी बहुत ज्यादा है। जिस तरफ भी हम नजर उठाएंगे कुछ न कुछ अभाव नजर आएगा। उस अभाव को दूर करना समाज के हर व्यक्ति का कर्तव्य है। लेकिन हम उतने जागृत नहीं हैं। हमने कार्यक्रम के प्रारंभ में एक प्रार्थना की थी - 'मेरे सोते हुए जीवन में रणभेरी बजा देना'। हम कह सकते हैं कि हम तो जाग रहे हैं, सो कहां रहे हैं? लेकिन हमारा जीवन सो रहा है। हमारा जीवन सो रहा है सामाजिक भाव में, हमारा जीवन सो रहा है अपने आप को सार्थक बनाने में और वह सार्थक तब बनेगा जब भगवान ने हमें जिस क्षत्रिय कुल में जन्म दिया है उसके अनुरूप जीवन जीना प्रारंभ करेंगे। आज के युग में क्षात्रधर्म केवल सीमा पर लड़ने तक सीमित नहीं है। क्षत्रिय का कर्तव्य है - क्षतात त्रायते इति क्षत्रिय। जो क्षय से बचाए, जिसके पास जाने पर लोगों को यह महसूस हो कि वे सुरक्षित है। किस प्रकार की सुरक्षा? केवल बाहरी सुरक्षा नहीं, बल्कि हर प्रकार की सुरक्षा कि मैं यहां सुखी रहूंगा और मुझे हर तरह का आश्रय मिलेगा। इस प्रकार का हमारा जीवन बने तभी उस जीवन को सार्थक कहा जा सकता है। **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

समारोहपूर्वक मनाई सवाई जयसिंह जी की 335वीं जयंती

जयपुर के संस्थापक महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय की 335वीं जयंती 3 नवंबर को जयपुर स्थित राजपूत सभा भवन में समारोह पूर्वक मनाई गई। श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी, राजस्थान विधानसभा में उपनेता प्रतिपक्ष राजेंद्र राठौड़ और आरटीडीसी चेयरमैन धर्मेंद्र राठौड़ सहित विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधि कार्यक्रम में उपस्थित रहे तथा सवाई जयसिंह जी को श्रद्धांजलि दी, साथ ही राजपूत सभा द्वारा समाज हित में किए जा रहे कार्यों की सराहना की। दोनों वक्ताओं ने महाराजा जयसिंह जी के जीवन चरित्र और बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला और कहा कि वे एक दूरदर्शी शासक, वीर योद्धा, लोकप्रिय राजा, श्रेष्ठतम नगर नियोजक, कुशल प्रशासक और ज्योतिष विज्ञान के महान ज्ञाता थे। धर्मेंद्र राठौड़ ने समाज की मांग पर सरकार द्वारा क्षत्रिय विकास बोर्ड के गठन में सहयोग करने का आश्वासन दिया। श्री राजपूत सभा के अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई ने संस्थान द्वारा समाज हित में आयोजित की जा रही विभिन्न गतिविधियों के संबंध में जानकारी प्रदान की **(शेष पृष्ठ 7 पर)**

अनवरत जारी है समाज में क्षत्रियोचित संस्कारों का निर्माण

(तीन राज्यों में बारह शिविर संपन्न, 1100 शिविरार्थियों ने लिया प्रशिक्षण)

हमीरा

पारसोली

आस की ढाणी

श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रशिक्षण शिविरों की श्रृंखला अनवरत जारी है। इसी क्रम में 26 अक्टूबर से 8 नवंबर तक की अवधि में राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र में कुल 12 शिविर संपन्न हुए जिनमें चार माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर तथा आठ प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्मिलित हैं। इनमें चार शिविर बालिकाओं के रहे। इन शिविरों में 1100 से अधिक शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। गुजरात में गोहिलवाड़ संभाग के भाल प्रांत में सात दिवसीय माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर धोलेरा के रा भवन में 28 अक्टूबर से 3 नवंबर की अवधि में माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास के संचालन में संपन्न हुआ। शिविर में मोरचंद, अवानिया, नारी, शाहपुरा, शामपरा, खडसलिया, थलसर, तणाजा, भावनगर, धोलेरा, पांची, कोटडानायाणी, विसामण, देडकदड, रोजीया, सुरत, वडोदरा, अहमदाबाद, गांधीनगर, काणेटी, साणंद, पिंपण, रासम, भैंसाणा, जेतलवासणा, महेसाणा, नंदाली, कुकराणा, धोता, वणादर, चारडा, जगन्नाथपुरा आदि गांवों के 150 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। 31 अक्टूबर को शिविरार्थियों ने धोलेरा में नवनिर्मित स्मार्ट सिटी का अवलोकन व भ्रमण किया। शिविर के दौरान ही 1 नवंबर को गुजरात के स्वयंसेवकों का स्नेहमिलन भी आयोजित हुआ। 2 अक्टूबर को सभी स्वयंसेवकों ने रा भवन में वृक्षारोपण किया जिसमें 400 पौधे लगाए गए। इसी दिन दोपहर में स्थानीय सहयोगी एवं स्थानीय संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ संघप्रमुख श्री की बैठक भी हुई। समस्त ग्रामवासियों ने मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। भाल प्रांत में ही बालिकाओं का माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर भी इसी अवधि में धधुंका स्थित दरबार बोर्डिंग में संपन्न हुआ। शिविर का संचालन जागृतिबा हरदास का बास ने किया। उन्होंने शिविर के प्रथम दिन बालिकाओं का स्वागत करते हुए कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ आप सबका तिलक कर स्वागत करता है क्योंकि आप इस समाज की आशा की ज्योति है। हमारे अंदर जो भी अवगुण आदि हैं, उन्हें इस परिसर के बाहर ही त्याग दें। बिल्कुल कोरे कागज की तरह हम अपने आप को यहां प्रस्तुत करें और सात दिनों तक इस शिविर में जो भी प्रशिक्षण आपको दिया जाए उसे आप अपने इस कोरे कागज पर अंकित करें। माता को निर्माता कहा गया है क्योंकि वही संतान के व्यक्तित्व का निर्माण करती है। इसलिए हमें यह ध्यान रखना है कि हमारा जीवन भी उन्हीं आदर्शों पर चले, जिनका पालन हमारे पूर्वजों ने किया था। इस बात को सदा स्मरण रखें कि समाज का जो ऋण हम पर है उसे हमें चुकाना है। शिविर में धोलेरा, जस्का, मोरचंद, अवानिया, भावनगर, काणेटी, साणंद, मोडासर, गांधीनगर, अहमदाबाद, मोडासा, ढिमा, लिबुंणी, चारडा, बरोड़ा आदि स्थानों से 68 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह धोलेरा का भी सानिध्य रहा। 31 अक्टूबर को माननीय संघप्रमुख श्री भी शिविर में पधारे तथा बौद्धिक के समय 'जीवित समाज के लक्षण' विषय पर प्रवचन दिया। शिविर की व्यवस्था श्री चूड़ासमा राजपूत समाज द्वारा की गई। इसी प्रकार आई माता मंदिर, सिरवी समाज वाड़ी, मीरा भायंदर मुंबई में भी 25 से 30 अक्टूबर तक माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। केंद्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची के संचालन में संपन्न इस शिविर में मुंबई व पुणे के 60 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। स्वागत उद्बोधन में शिविरार्थियों को बताया गया कि जिस प्रकार भगवान राम द्वारा आसुरी शक्तियों का विनाश करके अयोध्या लौटने पर अमावस्या की रात्रि को दीपकों की जगमगाहट से बाहर का अंधकार दूर करके दीपावली का पर्व मनाया गया वैसे ही हम हमारे अंदर की ज्योति को जगाकर जाज्वल्यमान बनाने यहां आए हैं

सुंदरा

धुंधका

जिससे हम समाज से निराशा के अंधकार को दूर कर सकें। हमने अपने छह दिन संघ के नाम कर दिए हैं तो अब यहां जागृत रहकर शिक्षण ग्रहण करना है। जितने हम जागृत रहेंगे, अपने आप को जितना समर्पित करेंगे, उतना ही हम प्राप्त कर पाएंगे। विदाई संदेश में बताया गया कि जब सभी लोग त्यौंहार पर खुशियां मना रहे थे तब हम यहां संघ की साधना करने आए थे। ये हमारी संकल्प शक्ति का प्रमाण है। यहां हमने हमारे अंदर की आसुरी शक्तियों को नष्ट करने का अभ्यास किया लेकिन ये एक बार में नष्ट होने वाली नहीं हैं, इसके लिए नियमित व निरंतर अभ्यास की जरूरत है। ईश्वर सिंह जागसा, शेर सिंह जागसा ने मुंबई प्रांत के स्वयंसेवकों के सहयोग से व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

नागौर संभाग के लाडनूं प्रांत में भी एक माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन डीडवाना के समीप आस की ढाणी में स्थित अमर शहीद डिफेंस एकेडमी में 26 से 31 अक्टूबर तक साधना संगम संस्थान के तत्वावधान में हुआ। शिविर का संचालन नागौर संभाग प्रमुख शिम्भुसिंह आसरवा ने किया। उन्होंने कहा कि राजपूत किस तरह क्षत्रिय बनें और क्षत्रिय बनकर अपने पूर्वजों की भांति प्राणी मात्र के लिए अपना जीवन समर्पित करें, उसका व्यावहारिक अभ्यास इस माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर में करवाया जा रहा है। अपने पूर्वजों के जीवन से सीख ग्रहण करके राजपूत युवा पीढी क्षत्रियोचित जीवन जीने की ओर बढ़े, इस हेतु श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज में पिछले 76 वर्षों से गीता आधारित सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली के साथ ऐसे शिविर समाज के सहयोग से आयोजित कर रहा है। शिविरार्थियों को विदाई देते हुए उन्होंने कहा कि जो संस्कार आपके जीवन में यहां विकसित हुए हैं उन्हें जीवन में सतत ढालने की आवश्यकता है। इसके लिए शाखाओं और शिविरों के द्वारा श्री क्षत्रिय युवक संघ के लगातार संपर्क में रहें और अपने जीवन को उत्कृष्ट बनाएं जिससे समाज अपने आप ही प्रगति करेगा। शिविर में नागौर संभाग के 56 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। श्रवण सिंह बरांगना, केशरीसिंह अखरोट ने समाजबंधुओं के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

लाडनूं प्रांत में ही बालिकाओं का भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर साधना संगम संस्थान के तत्वावधान में डीडवाना के श्री हिम्मत राजपूत छात्रावास में 28 से 31 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन उषा कंवर पाटोदा के द्वारा किया गया। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि पूज्य श्री तन सिंह जी के बताए हुए मार्ग पर चलने से ही समाज का कल्याण हो सकता है। आज के विपरीत वातावरण में हमें अपने कर्तव्य की याद दिलाने वाला केवल श्री क्षत्रिय युवक संघ ही है। अपनी इच्छाओं पर अपने कर्तव्य को प्राथमिकता देकर ही हम समाज की अन्य बालिकाओं को नई राह दिखाने वाली बन सकती हैं और उन्हें भी संघ मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर सकती हैं। शिविर में डीडवाना, जायल, लाडनूं सहित संपूर्ण नागौर जिले से 107 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर की व्यवस्था में वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवत सिंह सिंघाना, मोहन सिंह प्यावा, जितेन्द्र सिंह सांवराद, जीवराज सिंह देवराठी आदि ने सहयोग किया। केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ भी शिविर में उपस्थित रहे। जैसलमेर के हमीरा गांव में भी 28 से 31 अक्टूबर तक चार दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ जिसमें 50 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन करते हुए रतन सिंह बडोड़ा गाँव ने कहा कि क्षत्रिय समाज में जन्म लेना गौरव की बात है परन्तु हमें उस क्षात्र परम्परा का अनुसरण करने की जिम्मेदारी भी लेनी होगी जो हर युग में सर्व समाज की ढाल बनती आई है। इसके लिए हमें स्वयं को सक्षम बनाना है। हम अपने पवित्र भावों व विचारों को साकार करने का संकल्प लें तथा कड़ी मेहनत करें, यही संघ की चाह है। श्रेष्ठ लोगों का श्रेष्ठ संगठन ही भारतीय समाज की रक्षा कर सकता है अतः हम सदैव दुर्व्यसनों से दूर रहें तथा सभी के साथ स्नेह का व्यवहार करते हुए गुरुजनों व माता- पिता की आकांक्षाओं पर खरा उतरने हेतु निरन्तर प्रयास व अभ्यास करें, हमें सफलता अवश्य मिलेगी। शिविर समापन के अवसर पर मिलन कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें हमीरा सरपंच तुलछ सिंह, व्याख्याता जालम सिंह, कँवराज सिंह, जुगत सिंह, मदन सिंह, देवी सिंह, सांवल सिंह मोढ़ा, छात्र संघ अध्यक्ष जसवंत सिंह तेजमालता, चन्द्रवीर सिंह, वीरेंद्र सिंह, प्रदीप सिंह, बलवंत सिंह पाली, प्रयाग सिंह भादरिया, पदम सिंह, देवी सिंह तेजमालता, दलपत सिंह झिंझिनयाली, भभूत सिंह, अजयपाल सिंह बडोड़ा गांव सहित अनेकों समाजबंधु सम्मिलित हुए। प्रान्त प्रमुख उम्मेद सिंह बडोड़ा गांव सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। ग्रामवासियों ने मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

कोटा

डीडवाना

मुम्बई

अपने योग्य काम चुनें और सहयोग करना प्रारम्भ करें: सरवड़ी

हमारा समाज हमारी मां है और मां की सेवा जो नहीं करता वह कपूत है। हमारा समाज इतना लंबा चौड़ा है और उसमें इतने अभाव हैं कि किसी भी अभाव को पकड़ कर उस अभाव को दूर करने का प्रयास करें, यही सेवा है। अगर वह हम नहीं कर पाते तो हम कपूत हैं। हमें कपूत बनना है या सपूत बनना है यह हमको निर्णय लेना है। अगर सपूत बनना है तो बहुत तकलीफ होगी, बहुत काम करना पड़ेगा और उस काम के लिए हमारी तैयारी होनी चाहिए। वह काम हम तभी पूरा कर सकेंगे जब हम सामूहिक और संगठित रूप से सोची-समझी एक रणनीति के अनुसार चलेंगे। इसीलिए अलग-अलग क्षेत्रों में श्री क्षत्रिय युवक संघ के आनुषंगिक संगठन काम कर रहे हैं और धीरे-धीरे वह अपनी गतिविधियों को बढ़ा रहे हैं। इसके अलावा और कहीं आवश्यकता हुई तो नए आनुषंगिक संगठन भी बन सकते हैं या उनके साथ कोई नया काम जोड़ा जा सकता है, जैसी भी समाज की आवश्यकता होगी। श्री क्षत्रिय युवक संघ 75 साल का हुआ है लेकिन किसी संगठन के लिए यह बड़ी उम्र नहीं है और ऐसे समाज के संगठन के लिए, जिसके पतन में हजारों साल लगे हैं, उस समाज को वापस उस पतनावस्था से उभार कर एक विकसित स्तर पर, एक सम्मानित स्तर पर लाना कोई आसान काम नहीं है। उसके लिए बहुत लंबा समय चाहिए लेकिन अब कम से कम इतनी संख्या हो गई जिसमें काम को बांटा जा सकता है, इसलिए अलग-अलग क्षेत्र में यह काम करना प्रारंभ किया गया है। इसमें प्रताप युवा शक्ति भी सम्मिलित है। इसमें आप जो सहयोग कर सकते हैं वह करें। आप जिस प्रकार का कार्य कर सकते हैं, उसको चुन लें और उसके अनुसार सहयोग करना प्रारंभ करने कर दें। उपर्युक्त बात वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के आनुषंगिक संगठन श्री प्रताप युवा शक्ति द्वारा 31 अक्टूबर को संघशक्ति में आयोजित दीपावली स्नेहमिलन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि किसी को दायित्व दिया जाए, यह आवश्यक नहीं है। हम क्यों दायित्व की बात करें? हमारा दायित्व है समाज रूपी मां की सेवा करना, इसलिए उस मां की सेवा में जो कुछ भी हम कर सकते हैं वह करें। कोई भी काम छोटा नहीं है। कोई यह समझे कि समाज को ऊंचा ले जाने के लिए तो राजनीति में ही आगे बढ़ना चाहिए। यह कोई आवश्यक नहीं है। राजनीति वाले जो आज हैं वे तो बहके हुए हैं। समाज का काम जो जमीनी स्तर पर कर रहे हैं, वह ज्यादा ठीक है। जो समाज में चारित्रिक परिवर्तन लाना चाहते हैं और उसके लिए जो निरंतर काम कर रहे हैं वह ज्यादा उपयोगी है। हमको भी इस प्रक्रिया में कहीं ना कहीं अपना काम ढूंढना चाहिए और फिर आगे बढ़ते रहना चाहिए। यद्यपि इतना आसान भी नहीं है यह काम कि हम जो आज तय करके जाएंगे वह कल शुरू कर देंगे या पूरा कर लेंगे क्योंकि व्यक्ति को परिवार का भी पालन करना पड़ता है, अन्य समस्याएं भी आती है लेकिन अगर हम लगातार संघ के संपर्क में रहे हैं तो जहां कहीं भी राजपूत जाति की बात उठेगी हमारे कान खड़े हो जाएंगे। हम सदैव यह सोचेंगे कि मैं अपने समाज के लिए क्या कर सकता हूं और यही कारण है कि आज चेन्नई में संघ के शिविर लग रहे हैं, कर्नाटक में भी लग रहे हैं, केरल में भी लग रहे हैं। ये सब यहां से गए हुए लोग ही कर रहे हैं। जो प्रारंभिक 25 साल की आयु है उसमें अगर हमने लोगों को संपर्क में लेकर उनके सामाजिक भाव को विकसित कर दिया तो वह आगे हमेशा काम आएगा। वह जहां कहीं भी रहेगा वहां अपनी परिस्थितियों के अनुसार कार्य अवश्य करेगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ के माध्यम से यह जो काम अलग-अलग आनुषंगिक संगठनों को दिया जा रहा है उसमें आप सब भागीदार हैं। आप लोगों को कार्य करना है क्योंकि यह समाज आपका है। प्रताप युवा शक्ति के साथ आप लोग मिलकर जैसा काम कर सकते हैं, जितनी क्षमता के अनुसार काम कर सकते हैं, उतना करें। भगवान निश्चित रूप से मदद करेगा, क्योंकि यह काम भगवान का है। बैठक में केन्द्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा ने संगठन की कार्ययोजना सामने रखी। प्रताप युवा शक्ति का परिचय गजेंद्र सिंह बरवाली ने दिया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के जयपुर संभाग प्रमुख राजेंद्र सिंह बोबासर ने सभी को दीपावली की शुभकामनाए दी। कुलदीप सिंह बिचपंडी, छात्र नेता लोकेंद्र सिंह रायथलिया एवं पूर्व छात्र नेता जोगेंद्र सिंह सांवरदा ने छात्र राजनीति से जुड़े विषयों पर अपनी बात रखी। महेंद्र सिंह खेडी, जितेन्द्र सिंह नरूका, भानूप्रताप सिंह, प्रेम सिंह बनवासा, गजेन्द्र सिंह चिराणा, नरेन्द्र सिंह शेखावत, अजय सिंह चौहान, रणवीर सिंह राजावत सहित अनेकों गणमान्य प्रतिनिधि कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

शिक्षक बालक के जीवन का निमार्ता है

आप लोग शिक्षक हैं। शिक्षक बच्चे का जीवन बनाता है, उसको एक पगडंडी देता है जिस पर वह चलता है। ऐसे महत्वपूर्ण दायित्व को लेकर आप चल रहे हो तो उसके लिए आपको थोड़ा त्याग भी करना पड़ेगा, कुछ कठिनाइयां आएंगी तो उनको भी सहन करना पड़ेगा। लेकिन यह आवश्यक है कि सामूहिक रूप से मिलकर हम समाज के बच्चों को आगे बढ़ाएं, उनको शिक्षित करें, उनकी जैसी आवश्यकता है उसके अनुसार उनकी सहायता करें। जैसे कोई बच्चा पढ़ने में होशियार हैं लेकिन उसके पास कोई साधन नहीं है तो उसको हम कैसे आगे बढ़ा सकते हैं, यह सोचना शिक्षक का ही काम है। जो पहले गुरुकुल होते थे वह व्यवस्था आज नहीं है। आज तो स्कूल ही गुरुकुल है और इसमें आप ही गुरु हैं। आपको उनको गुरुता के साथ आगे बढ़ाना है। यह आपका बहुत बड़ा दायित्व है और आप इस दायित्व को निभा रहे हैं यह बहुत खुशी की बात है। इस बैठक के लिए आपने आगे आकर पहल की है यह भी प्रसन्नता का विषय है। समाज जब इस तरह जाग जाए कि जो मेरी जिम्मेदारी है, जो समाज के प्रति मेरा दायित्व है, उस दायित्व को पूरा करूं, अगर ऐसी भावना हममें से अधिकांश लोगों में आ जाए तो इस समाज के विकास को कोई नहीं रोक सकता। आज आपके साथ सारी जातियां जुड़ने को तैयार हैं क्योंकि जो केवल अपनी जाति का काम करते हैं और किसी का काम नहीं करते उनके साथ लोग आने को तैयार नहीं है, लेकिन आपके साथ आ जाएंगे क्योंकि आप सबके साथ समान रूप से व्यवहार करते हुए चलते हैं। इसलिए अपनी उस प्रवृत्ति को, जो क्षत्रिय की प्रवृत्ति है, राजपूत की प्रवृत्ति है, उसको मजबूत बनाकर सामूहिक रूप से सबको साथ ले करके चलें। भगवान से भी प्रार्थना है कि हम को ऐसी सीख दे कि हम सब इसी प्रकार आपस में मिलकर संवाद करके सारी बाधाओं को दूर कर सकें। उपर्युक्त बात माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने 30 अक्टूबर को शिवकुंज गार्डन, वैशालीनगर, जयपुर में आयोजित राजपूत शिक्षकों के दीपावली स्नेहमिलन समारोह को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि आप सब यहां इकट्ठे हुए हैं तो यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि कम से कम हम साथ बैठना तो सीखे। साथ बैठकर ही हम सब में एकता हो गई, ऐसा भी नहीं है। लेकिन अगर बार बार साथ बैठते रहेंगे, संवाद करते रहेंगे तो धीरे-धीरे

निकटता आएगी, हमारी दूरियां थोड़ी कम होगी। हम शिकायत करते हैं कि हमारा काम नहीं होता लेकिन काम तब तक नहीं होगा जब तक हमारी शक्ति नहीं होगी, जब तक हम सबल बनकर लोगों के सामने नहीं आएंगे तब तक कोई काम नहीं होगा। कोई काम अगर नहीं होता है तो इसके लिए रोना नहीं रोना चाहिए बल्कि उसके लिए अपनी ताकत को पनपाना होगा। दूसरे लोगों से तुलना करने से पहले हमें देखना होगा कि यदि हमारा कोई व्यक्ति आगे बढ़ता है तो क्या पूरा समाज उसके साथ रहता है? क्या हम अपने लोगों को बड़ी संख्या में विधानसभा में भेज रहे हैं? हम तो जहां पर भी राजपूत कांस्टीट्यूएंसी हैं वहां दस-दस कैंडिडेट अभी से घूम रहे हैं। यदि किसी राजपूत को कोई पार्टी टिकट देगी तो हमारे ही लोग उसके वोट काटेंगे। लेकिन ठोकर लगती है तो आदमी सावधान बनता है। हम भी आगे सावधानी के साथ चलें और इस प्रकार के कार्यक्रम निरंतर करते रहें तो समस्याएं भी हल होंगी, एक दूसरे के साथ निकटता भी आएगी। इससे पूर्व उन्होंने स्वागत - माल्यार्पण जैसी औपचारिकताओं को निरर्थक बताया और कहा कि हम सब एक ही परिवार के सदस्य हैं और परिवार में स्वागत-सम्मान आदि नहीं किया जाता। ऐसा करके हम अहंकार को पनपा रहे हैं। इतिहास को जरा उठाकर देखें कि इस अहंकार ने हमारा कितना नुकसान किया है। इसलिए जहां तक हो सके इसको सीमित कीजिए। राजस्थान सरकार के केबिनेट मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षित वर्ग को एकत्रित करना व संगठित करना अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण और सार्थक पहल है क्योंकि संगठन में ही शक्ति है। हम संगठित होकर रहेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी। इस कार्यक्रम में कर्मचारी नेता गजेंद्र सिंह, श्रवणसिंह सानिया सहित सैकड़ों राजपूत शिक्षकों की उपस्थिति रही। महिला शिक्षिकाएं भी कार्यक्रम में उपस्थित रहीं।

बसेड़ी (धौलपुर) में दीपावली स्नेहमिलन संपन्न

धौलपुर में श्री राकेश सिंह परमार हवेली चौक के श्री राम वाटिका मैरिज होम पर 30 अक्टूबर को दीपावली स्नेहमिलन कार्यक्रम का आयोजन हुआ। श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी कृष्ण सिंह राणीगांव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य तन सिंह जी ने संघ की स्थापना समाज के लोगों को संस्कारित करने के उद्देश्य से की है। संघ द्वारा क्षत्रियोचित गुणों को समाज की युवा पीढ़ी के जीवन-आचरण में धारित करवाने का कार्य शाखाओं और शिविरों के माध्यम से किया जाता है। संघ की हीरक जयंती पर आयोजित समारोह के माध्यम से समूचे राष्ट्र में श्री क्षत्रिय युवक संघ की बात पहुंची है, लेकिन धौलपुर क्षेत्र अभी भी संघ के कार्य की दृष्टि से अधिक सक्रिय नहीं है। इसीलिए आज ये कार्यक्रम रखा गया है जिससे आप सभी तक संघ का यह संदेश पहुंचाया जा सके कि हमने राजपूत के घर में जन्म लिया है तो क्षत्रिय के गुणों को धारण करने पर ही हमारे जीवन का उद्देश्य पूरा हो सकता है। किस प्रकार अपने चरित्र को उज्ज्वल बनाकर सच्चे क्षत्रिय बनकर हम समाज हित के कार्यों में जुट जाएं, इसी का प्रशिक्षण संघ द्वारा दिया जा रहा है। नानू सिंह रुखासर (चूरू) ने अपने संबोधन में कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज की युवा पीढ़ी को अच्छे संस्कार एवं सही दिशा का बोध कराने हेतु कार्य कर रहा है जिसकी आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यधिक आवश्यकता है। महादेव सिंह दांतली ने कहा कि राजपूत समाज वर्तमान समय की धारा के प्रवाह के साथ चले तभी आगे बढ़ेगा। हमें अपनी युवा पीढ़ी को शिक्षित एवं संस्कारित कर एक ऐसी दिशा देनी है जो आगे चलकर अपने समाज के विकास के साथ-साथ राष्ट्र निर्माण का भी आधार बने। कार्यक्रम में नत्थी सिंह नगला दरवेशा, धीर सिंह झिरी, भानु प्रताप सिंह बसेड़ी, ब्रजराज सिंह सलेमपुर, रामजीलाल पूठपूरा एवं जयसिंह आंगई ने भी अपने विचार रखे। रविंद्र सिंह हथवारी ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। धौलपुर क्षेत्र के अनेकों समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

संपादकीय

लक्ष्य प्राप्ति के आधार स्तंभ - साहस, धीरज और दूरदर्शिता

हम सभी जीवन में कोई ना कोई लक्ष्य लेकर चलते हैं। वह लक्ष्य ही हमारी गति का, हमारे विकास का प्रेरक होता है। लक्ष्य ही हमारे जीवन को दिशा भी देता है इसलिए लक्ष्योन्मुख व्यक्ति का जीवन समग्र और समस्वर बनता है। जिनका जीवन बिखरा हुआ दिखाई देता है वे भी कभी न कभी कोई लक्ष्य लेकर ही चले थे लेकिन किसी कारणवश या तो वे लक्ष्य भ्रष्ट हो गए हैं या वह लक्ष्य ही वास्तविक नहीं था जिसकी ओर वे चले थे जिससे उनके जीवन में गतिरोध आ जाता है। हमारे लक्ष्य समय, परिस्थिति आदि के अनुसार बदलते भी रहते हैं। कभी एक लक्ष्य को प्राप्त कर लेने पर नए लक्ष्य तय होते हैं तो कभी नए और व्यापक लक्ष्य का उदय पूर्व निर्धारित लक्ष्य को अर्थहीन बनाकर विसर्जित कर देता है। लेकिन यह निश्चित है कि हम सभी के जीवन अपने लक्ष्यों की ओर निरंतर बढ़ते रहने और उसमें सफल या असफल होने की ही कहानी है। इसीलिए किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के जो आधार स्तंभ होते हैं उन्हें हमें ठीक प्रकार से जान लेना चाहिए। आज हम ऐसे ही तीन आधार स्तंभों की बात करेंगे।

लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए जो सबसे पहली आवश्यकता है वह है - साहस। किसी लक्ष्य को चुनने के बाद उसकी ओर पहला कदम उठाने का आधार साहस ही है। हम विचार करें, हमारे जीवन में कितने लक्ष्य हमें पुकारते है, लेकिन उनकी ओर बढ़ने में साहस का अभाव हमारे कदम रोक देता है। एक सामान्य उदाहरण देखें - सामान्यतया जब भी हम कहीं पर किसी सामाजिक कुरीति की चर्चा करते हैं जैसे विवाह आदि अवसरों पर शराब का प्रयोग आदि, तो परिवार और समाज के अधिकांश व्यक्ति उसे कुरीति मानकर उसे दूर करने की बात पर सहमत होते हैं अर्थात् वे उस कुरीति को हटाने के लक्ष्य को स्वीकार करते हैं। लेकिन जब इस बात को अपने परिवार में लागू करने का अवसर आता है तो लक्ष्य से सैद्धांतिक रूप से सहमत होते हुए भी उसकी ओर बढ़ने का हमारा साहस जवाब दे जाता है। ऐसे में हम अनेक बहानों और तर्कों से अपनी साहस हीनता को ढकने का प्रयास करते हैं। हम जमाने की धारा में बिना संघर्ष के बहते चले जाते हैं और विडंबना यह है कि हम अपनी इस साहसहीनता को स्वीकार करने जितना भी साहस नहीं जुटा पाते और जिस लक्ष्य को हमने स्वयं ठीक माना था, उसे अव्यावहारिक बता कर स्वयं को सही सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। यह तो एक उदाहरण है पर अपने जीवन को हम गहराई से देखें तो पाएंगे कि अब तक न जाने कितने ही श्रेष्ठ लक्ष्य हमारे सामने आए हैं जिनकी ओर बढ़ने में हमारा, परिवार का और समाज का हित निहित होता है पर साहस के अभाव में हम उनकी ओर कदम ही नहीं बढ़ा पाते। इसलिए लक्ष्यप्राप्ति के लिए साहस का होना पहली आवश्यकता है और साहस के अर्जन की पहली सीढ़ी है आत्मनिरीक्षण। जो स्वयं का निरीक्षण करने का साहस करता है वह अपनी कमजोरियों को देख पाता है और उन्हें हराने का उपाय भी उसे आत्मचिंतन से ही उपलब्ध होता है।

दूसरी आवश्यकता है - धीरज। जिन में साहस होता है वह अपने लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाते हैं। किंतु कोई भी लक्ष्य पहले कदम पर ही प्राप्त नहीं हो जाता बल्कि उसकी ओर निरंतर बढ़ते रहना पड़ता है। इस निरंतरता के लिए धीरज का होना अनिवार्य है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए आगे बढ़ते हुए व्यक्ति को अनेक चुनौतियों का सामना करना ही पड़ता है और यदि उसमें विपरीत परिस्थितियों में आगे बढ़ने हेतु आवश्यक धीरज का अभाव होगा तो वह निश्चित रूप से निराश होकर या तो रुक जाएगा या अपनी दिशा बदल देगा। ऐसा होते हुए हम अपने आसपास अक्सर देखते हैं विशेषतः समाज कार्य के संदर्भ में। समाज के प्रति अपनत्व के भाव से प्रेरित होकर अनेक व्यक्ति समाज की सेवा हेतु कार्य करना प्रारंभ तो करते हैं लेकिन धीरज के अभाव में वे जल्दी ही निराश हो जाते हैं। वह निराशा उन्हें निष्क्रिय तो बनाती ही है, साथ ही कई बार अपनी नकारात्मक बातों से वे अन्य लोगों को भी हतोत्साहित करते हैं। केवल धैर्यवान व्यक्ति ही अपने तय किए मार्ग पर अंत तक चलने की क्षमता रखते हैं। धैर्य का उपार्जन करने के लिए व्यक्ति को कष्टों और अभावों को सहने का अभ्यास करना होता है और यह अभ्यास ही उसके धीरज को दृढ़ बनाता है।

किसी व्यक्ति में साहस हो, धीरज भी हो लेकिन उसके बाद भी ऐसा संभव है कि उसकी पूरी यात्रा का परिणाम अंत में शून्य निकले। यदि हमने अपने लक्ष्य को ठीक प्रकार से नहीं समझा है, तो गंतव्य तक पहुंच कर भी हम खाली हाथ रह जाते हैं। वहां पहुंच कर हमें पता चलता है कि जिस लक्ष्य को हमने वहां होना मान रखा था वह तो वहां है ही नहीं। इसे एक साधारण उदाहरण से हम समझें। जैसे कोई व्यक्ति अपने संतान के हित के उद्देश्य को लेकर चलता है और इसके लिए वह अधिक से अधिक धन, सुख-सुविधा आदि को जुटाने का मार्ग चुनता है। वह साहस पूर्वक अर्जन में लगता है और धीरज के साथ लगातार उस कार्य में अहर्निश जुटा भी रहता है। लेकिन अंत में संभव है कि वह यह पाए कि संतान के लिए समस्त धनसंपदा को जुटाकर भी वह उनका हित नहीं कर सका क्योंकि इस प्रयत्न में वह अपनी संतान को धन, सुविधा आदि का सदुपयोग करने वाला संतुलित मन तो दे ही नहीं पाया, न ही उसे संस्कारित और विवेकवान बनाने के लिए उसने कुछ किया। ऐसी स्थिति में जो धन और सुविधा उसने जुटाई है वह उसकी संतान के लिए हितकारी बनने की बजाय विनाशकारी अधिक बन जाती है। ऐसी स्थिति का कारण है - दूरदर्शिता का अभाव। व्यक्ति में दूरदृष्टि ना हो तो वह अपने लिए सही लक्ष्य का निर्धारण ही नहीं कर सकता। इस दूरदर्शिता को प्राप्त करने का जो श्रेष्ठतम माध्यम है वह है - श्रेष्ठ पुरुषों के अनुभूत ज्ञान को मानना। जो मार्ग हमारे पूर्वजों द्वारा परीक्षित है उस पर बढ़ने से दूरदर्शिता के अभाव की पूर्ति स्वतः हो जाती है।

इसलिए यह स्पष्ट है कि उपरोक्त तीन गुणों का यदि हम में अभाव हैं तो हम किसी भी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकेंगे। इन गुणों का अर्जन करके ही हम जीवन के लक्ष्यों को पाने में समर्थ हो सकते हैं। इसलिए अपना लक्ष्य तय करने और उसकी ओर बढ़ने से पूर्व हमें भली भांति अपने आचरण में इन गुणों को ढाल लेना चाहिए। संघ की साधना में स्वयंसेवक को इन तीनों गुणों का अर्जन कराया ही नहीं जाता बल्कि उनका व्यावहारिक धरातल पर परीक्षण भी किया जाता है क्योंकि संघ का उद्देश्य जीवन का महानतम उद्देश्य है और समय, काल व परिस्थिति से निरपेक्ष है इसलिए उसकी प्राप्ति के लिए महानतम साहस, धीरज और दूरदर्शिता की आवश्यकता है। आएं, हम भी संघ के प्रशिक्षण में से स्वयं को गुजारकर इन तीनों गुणों का अर्जन करें जिससे हम जीवन के सभी लक्ष्यों को प्राप्त करते हुए समाज, राष्ट्र और मानवता की सेवा के सुदृढ़ आधार बन सकें।

मेवाड़ का गुहिल वंश

महाराणा लक्षसिंह (लाखा) का स्वर्गवास होने पर हंसाबाई सती होने को तैयार हुई और चुंडा को कहा कि तुमने अपने छोटे भाई मोकल को कौनसी जागीर निश्चित की है इस पर चुंडा ने कहा कि 'माता मोकल तो मेवाड़ का स्वामी है और मैं तो उसका नौकर हूं उसके लिए जागीर की बात ही कौनसी है मोकल की उम्र अभी बहुत कम है अतः आप सती होने का विचार छोड़ दें और राज्य प्रबंध का तरफ ध्यान दें।' चूंडा के विशेष आग्रह पर हंसाबाई ने सती होने का विचार छोड़ दिया। चूंडा की पितृभक्ति और संकल्प की दृढ़ता को देखकर उन्हें राज्य का समस्त कार्य प्रबंध देखने का दायित्व दिया। चूंडा ने मोकल को राज्य सिंहासन पर बैठाकर सबसे पहले नजराना दिया। चूंडा सम्पूर्ण निष्ठा से छोटे भाई मोकल की सेवा करने लगा। चूंडा ने बड़ी कुशलता से राज्य का प्रबंध किया।

प्रजा उससे बहुत प्रसन्न रही। स्वार्थी लोगों को चूंडा का ऐसा प्रबंध देखकर बड़ी ईर्ष्या हुई और वो राजमाता हंसाबाई के कान भरने लगे। हंसाबाई का भाई राठौड़ रणमल भी राज्य प्रबंध को अपने हाथों में लेना चाहता था अतः उसने भी ऐसे स्वार्थी लोगों का साथ दिया। स्वार्थी लोगों की बातों में आकर राजमाता ने चूंडाको बुलाकर कहा कि या तो तुम मेवाड़ छोड़ दो या मुझे और मोकल को कोई छोटी जागीर देकर भेज दो। यह सुनकर सत्यव्रती चूंडा अपने छोटे भाई सहावदेव पर महाराणा मोकल की रक्षा का भार छोड़ कर अपने भाई अज्जा के साथ तुरन्त मेवाड़ छोड़ कर मांडू चले गए। मांडू के सुल्तान ने चूंडा का अत्यधिक सम्मान किया और उन्हें कई परगने जागीर में दिए। चूंडा के चले जाने पर रणमल ने राज्य के महत्वपूर्ण पदों पर अपने लोगों की नियुक्ति कर समस्त प्रबंध अपने हाथों में ले लिया। आयु में कम होने व रणमल के मामा होने के कारण महाराणा मोकल कुछ कह न सके।

महाराणा मोकल के समय नागौर के शासक फिरोज खां ने मेवाड़ की सीमाओं का अतिक्रमण का प्रयास किया। इस पर महाराणा मोकल ने नागौर पर आक्रमण किया और उसे परास्त किया। इस विजय का उल्लेख श्रृंगी ऋषि के लेख (वि.सं. 1485) और एकलिंगजी के दक्षिण द्वार की प्रशस्ति में भी मिलता है। महाराणा मोकल द्वारा गुजरात के सुल्तान अहमदशाह प्रथम को भी परास्त किया गया। इस पराजय का बदला लेने सुल्तान अहमदशाह प्रथम ने ई. 1433 में पुनः मेवाड़ पर आक्रमण किया और डूंगरपुर से होता हुआ जीलवाड़े की तरफ आया। महाराणा मोकल ने भी अपनी सेना सहित उधर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में एक स्थान पर उनके पड़ाव के दौरान चाचा व मेरा ने षड्यंत्र कर महषा पंवार आदि कुछ सरदारों को अपने पक्ष में करके महाराणा मोकल की हत्या कर दी। महाराणा मोकल ने चित्तौड़ में द्वारिकानाथ का मंदिर बनवाया और समिद्धेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया और उसके खर्च के लिए धनपुर गांव भेंट किया। महाराणा मोकल के समय के तीन शिलालेख प्राप्त हुए है जिनसे उनकी उपलब्धियों का पता चलता है। मोकल की मृत्यु के बाद उनका पुत्र कुंभा मेवाड़ का शासक बना। **(क्रमशः)**

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	24.11.2022 से 26.11.2022 तक	**भैंसाणा**, गुजरात।
02.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	26.11.2022 से 28.11.2022 तक	**नैनावा (बनासकांठा)**, गुजरात।
03.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	24.12.2022 से 27.12.2022 तक	**नीमच**, मध्यप्रदेश।
04.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	25.12.2022 से 28.12.2022 तक	**रामसर**, बाड़मेर।
05.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**डूंगरगढ़**, बीकानेर।
06.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**आलोक आश्रम**, बाड़मेर।
07.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**वंदे मातरम स्कूल**, पाली।
08.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**नाचना**, जैसलमेर
09.	मा.प्र.शि. (बालक)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**तोसनिवाल धर्म शाला धनौप माता मन्दिर परिसर**, धनौप जिला भीलवाड़ा (केकड़ी से बिजयनगर गुलाबपुरा प्राईवेट बस मार्ग पर वाया फुलिया कलां वाली बस से माता जी मन्दिर मार्ग पर उतरें। मेवाड़ वागड़ हाड़ौती से आने वाले वाया शाहपुरा भीलवाड़ा होकर फुलियाकला पुलिस स्टेसन के सामने उतरें । वहां से बिजयनगर जाने वाली प्राईवेट बस पकड़कर मन्दिर मार्ग पर उतरें । अजमेर से आने वाले बिजयनगर रेल्वे फाटक से धनौप होकर जाने वाली केकड़ी की बस से पहुंचे। जयपुर से आने वाले वैशाली डिपो बस जयपुर भीलवाड़ा वाया केकड़ी फुलिया से पुलिस स्टेशन उतरें व प्राईवेट बस से मन्दिर उतरें । **संपर्क सूत्र** 9602246116, 9950286101, 9799278932
10.	मा.प्र.शि. (बालिका)	25.12.2022 से 31.12.2022 तक	**जयमल कोट पुष्कर**, अजमेर **संपर्क सूत्र** 9414005449, 9749922222, 9413040742
11.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	28.12.2022 से 31.12.2022 तक	**मंदसोर**, मध्यप्रदेश।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

दीपेंद्र सिंह रायधना का सहायक आचार्य परीक्षा में चयन

लाडनूं के रायधना गांव के निवासी डॉ. दीपेंद्र सिंह राठौड़ ने राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सहायक आचार्य (समाजशास्त्र) परीक्षा में राज्य में तीसरा स्थान प्राप्त किया है। वे वर्तमान में राजकीय महाविद्यालय सिरोही में विद्या संबल योजना के तहत कार्यरत है। इससे पूर्व दीपेंद्र सिंह का चयन हरियाणा में व्याख्याता के पद के लिए भी हो चुका है। उन्होंने जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर से पीएचडी की है।

योगेंद्र सिंह तंवरा का राज्यस्तरीय योगा ओलंपियाड में चयन

जायल के स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल के विद्यार्थी योगेंद्र सिंह तंवरा का बीकानेर में आयोजित होने वाले राज्यस्तरीय योगा ओलंपियाड हेतु चयन हुआ है। योगेंद्र के पिता सुरेंद्र सिंह तंवरा श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक है।

संजना देवड़ा का जेएनयू प्रवेश परीक्षा में प्रथम स्थान

बाड़मेर जिले में सिवाणा की निवासी संजना देवड़ा सुपुत्री नरपत सिंह देवड़ा ने केंद्रीय विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा CUET-PG (हिंदी साहित्य) में JNU दिल्ली में प्रथम स्थान प्राप्त कर परिजनों और क्षेत्रवासियों को गौरवान्वित किया है। संजना होनहार छात्रा रही है। वह कक्षा 10 में 94.83% अंक हासिल कर इंदिरा प्रियदर्शनी पुरस्कार से भी सम्मानित हो चुकी है।

यशस्वी नाथावत ने तीरंदाजी में जीता स्वर्ण पदक

यशस्वी नाथावत ने भारतीय तीरंदाजी संघ के तत्वावधान में पणजी, गोवा में 4 से 10 नवंबर 2022 तक आयोजित 42वीं एनटीपीसी राष्ट्रीय जूनियर तीरंदाजी प्रतियोगिता में राजस्थान की महिला कम्पाउंड टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए स्वर्ण पदक जीता है। यशस्वी प्रिंस एकेडमी में 12वीं कक्षा की छात्रा है।

सरवाड़ में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की कार्यशाला संपन्न

श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन अजमेर टीम की कार्यशाला सरवाड़ के खीरिया हाउस में 5-6 नवंबर को संपन्न हुई। फाउंडेशन के संयोजक रेंवत सिंह पाटोदा ने अजमेर जिले में फाऊंडेशन के उद्देश्यों के अनुरूप कार्य करने की क्या-क्या संभावनाएं हो सकती हैं, इस पर चर्चा की और कहा कि निरंतरता के साथ किए जाने वाला कार्य ही सफल होता है। इस निरंतरता के लिए जो प्रेरणा आवश्यक है वो आपस में मिलने और संवाद करने से मिलती है इसलिए आपसी संपर्क को बनाए रखने के लिए ऐसी कार्यशालाओं और बैठकों का नियमित आयोजन जरूरी है। बैठक में फाउंडेशन की अजमेर टीम द्वारा किए जाने वाले कार्यों तथा आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाई गई। कार्यक्रम में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवान सिंह देवगांव, सेवानिवृत्त आर पी एस जसवंत सिंह डोराई, सूरजभान सिंह खिरिया, किशोर सिंह देवलिया, पृथ्वी सिंह सांपणदा, गिरधर सिंह छाबड़िया, महेंद्र सिंह धुवालिया, दीनदयाल सिंह कुक्कड़, संदीप सिंह राहोली सहित अन्य सहयोगी उपस्थित रहे। श्री क्षत्रिय युवक संघ के अजमेर प्रांत प्रमुख विजयराज सिंह जालियां भी सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अनवरत जारी है समाज में क्षत्रियोचित संस्कारों का निर्माण

धुंधका

चाकसु

(पेज दो से लगातार)

कोटा में भी बारां रोड पर स्थित आरआर रिजॉर्ट में चार दिवसीय बालिका शिविर का आयोजन इसी अवधि में हुआ। शिविर का संचालन करते हुए यशवीर कंवर बैण्याकाबास ने बालिकाओं से कहा कि एक नारी दो परिवारों का निर्माण करती हैं। उनकी समाज में स्थिति पुरुषों के जितनी ही महत्वपूर्ण एवं वांछनीय है। संघ बालिकाओं को संस्कारित करने का कार्य कर रहा है जिससे वे अपने परिवार व समाज को जोड़कर रखने में समर्थ बन सकें। उन्होंने बालिकाओं को अपने सामर्थ्य, अपनी शक्ति का सही मूल्य समझने के लिये गीता में भगवान श्री कृष्ण द्वारा बताए सिद्धांतों पर जीवन जीने की बात कही। शिविर के अंतिम दिन कोटा के पूर्व राजपरिवार की सदस्या एवं लाड़पुरा विधानसभा सीट से विधायक कल्पना देवी ने शिविर की गतिविधियों का अवलोकन किया। वे शिविरार्थी बालिकाओं के साथ चर्चा में भी शामिल हुई। उन्होंने कहा कि बालिकाओं को हमारे समाज में शक्ति का रूप कहा गया है और समाज में उनकी हिस्सेदारी भी इसी के अनुसार होनी चाहिये। उन्होने भविष्य में श्री क्षत्रिय युवक संघ के कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी व सहयोग का आश्वासन भी दिया। शिविर में 80 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रतापगढ़ जिले में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर दलोट गांव में 27 से 30 अक्टूबर तक सम्पन्न हुआ। शिविर में प्रतापगढ़, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, बांसवाडा, डूंगरपुर जिले से लगभग 85 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। मेवाड़ मालवा संभागप्रमुख बृजराज सिंह खारडा ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों को विदाई देते हुए कहा कि हमारी संस्कृति की रक्षा का दायित्व हमारा है क्योंकि हमारे पूर्वजों ने ही अपने त्याग और बलिदान से इस संस्कृति को पोषित किया है। आज के परिप्रेक्ष्य में क्षात्रधर्म का पालन करते हुए

हाथीतला

संस्कृति का रक्षण किस प्रकार किया जाए, इसका मार्ग संघ बताता है। शिविर में भँवर सिंह बेमला, हनुमंत सिंह सज्जन सिंह जी का गडा, दिग्विजय सिंह लाम्बापारडा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। अजीत सिंह बोरदिया, राजकृष्ण सिंह अम्बीरामा, राजेन्द्र सिंह निनोर, होकम सिंह बरोठा, कुबेर सिंह सेलारपुरा, अमर सिंह झालो का खेडा सहित स्थानीय समाजबंधुओं ने व्यवस्था में सहयोग किया। बाड़मेर के हाथीतला गांव में भी 26 से 29 अगस्त तक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए भगवान सिंह दुधवा ने कहा कि संघ ने आपके हृदय में जिन संस्कारों का बीजारोपण किया है, उन्हें पल्लवित और पोषित कर-के वटवृक्ष बनाने का दायित्व आपका है। इसके लिए अनुकूलता का सृजन और प्रतिकूलता का वर्जन आवश्यक है। संघ आपसे आशा करता है कि आप संस्कार निर्माण के इस अभियान में संघ के संदेशवाहक बनेंगे और समाज व राष्ट्र के जिम्मेदार नागरिक बनेंगे। शिविर में बुठ, हाथीतला, मिठड़ा, महाबार, उंडखा, राणासर, बांस्ला आदि गांवो के 200 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। विदाई कार्यक्रम में संभागप्रमुख महिपाल सिंह चूली और प्रांतप्रमुख छगन सिंह लुणु सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

जयपुर संभाग के टोंक मंडल में बालिकाओं का एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर चाकसू में 28 से 31 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। शिविर का संचालन संतोष कंवर सिसरवादा ने किया। उन्होंने बालिकाओं से कहा कि जो कुछ भी आपको यहां सिखाया जा रहा है वह आपके जीवन को नई दिशा देगा। लेकिन इस शिक्षण को अपने जीवन का अंग बनाने के लिए आपको निरंतर संघ के शिविर और शाखा के माध्यम से अभ्यास करते रहना होगा। शिविर में चाकसू, हिंगोनिया, बापू गांव, जोबनेर, दांतली (करोली), पलई, गरुड़वासी, कंवरपुरा, रिसानी और जयपुर शहर से 70 बालिकाओं ने भाग लिया। अर्जुन सिंह हिंगोनिया ने श्री राजपूत सभा चाकसू के सहयोगियों के साथ मिलकर व्यवस्था में सहयोग किया। बाड़मेर संभाग के शिव प्रांत में सुंदरा गांव में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 5 से 8 नवंबर की अवधि में संपन्न हुआ। शिविर का संचालन करते हुए गणपत सिंह बूठ ने शिविरार्थियों से कहा कि भगवान ने हमें मनुष्य जन्म देकर हम पर कृपा की है, लेकिन इस मनुष्य जीवन को सार्थक करने के लिए संस्कारवान बनना आवश्यक है। संस्कारवान व्यक्ति ही अपने कर्तव्य और दायित्व को पहचान कर उसका निर्वहन कर सकता है। शिविर का पूरा शिक्षण हमें संस्कारवान बनाने का ही अभ्यास है। शिविर में सुंदरा, रोहिडी, पांचला, बिजावल, गडरा रोड, शहजाद का पार आदि गांवों के 105 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसी अवधि में चितौड़गढ़ प्रांत में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर नला का बालाजी, पारसोली में आयोजित हुआ। शिविर संचालक मोहब्बत सिंह धींगाणा ने शिविरार्थियों को हमारे गौरवशाली इतिहास की जानकारी देते हुए बताया कि क्षत्रिय जाति का ऐसा उज्जवल इतिहास है जिसको पूरा विश्व आदर्श मानता है। उसी कुल में जन्म लेकर, उनके वंशज होकर भी आज हम उनका अनुसरण नहीं कर पा रहे हैं। इसका कारण यही है कि हमारे संस्कारों में शिथिलता आ गई है। आज केवल उचित वातारण देकर उन संस्कारों को पुनः जागृत करने की आवश्यकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ आपको वही वातावरण उपलब्ध कराकर ऐसे युवा तैयार कर रहा है जो हमारे अतीत के गौरव को पुनः प्राप्त करें। ऐसे ही संस्कारवान युवा भारत को भविष्य में विश्वगुरु का स्थान वापिस दिला सकेंगे। शिविर में नरधारी, छोटा खेडा, सहाडा, खेडिया, गोपालपुरा, बैजनाथिया, मोतीपुरा, मुरलिया, आकोलागढ, शिरडी, सतनावत, बैगूकिला, जोधपुरिया, नाहरगढ, फाचर,रूद, झालरा, बेमला आदि गांवों के स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। जोगेन्द्र सिंह छोटाखेडा ने सहयोगियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

जोधपुर किसान सम्मेलन हेतु तैयारी बैठकों का दौर

श्री प्रताप फाउंडेशन के तत्वावधान में 13 नवंबर को जोधपुर के श्री हनुवन्त छात्रावास में आयोजित होने वाले किसान सम्मेलन के लिए जिले भर में विभिन्न स्थानों पर तैयारी एवं संपर्क बैठकें आयोजित हुई। 22 अक्टूबर को लोहावट विधानसभा के बापिणी मुख्यालय पर जनसंपर्क किया गया एवं सभी को गांव-गांव जनसंपर्क करने हेतु जिम्मेदारी सौंपी गई। इस बैठक में श्री क्षत्रिय युवक संघ के केंद्रीय कार्यकारी गजेंद्र सिंह आऊ सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। 26 अक्टूबर को ओसियां विधानसभा के तापु में जनसंपर्क किया गया। इस दौरान बारा सरपंच भवानी सिंह भाटी, तापु सरपंच बलवीर सिंह भाटी सहित अन्य स्थानीय गणमान्य जन उपस्थित रहे। 27 अक्टूबर को बिलाड़ा विधानसभा की बैठक पिचियाक स्थित गणेश मंदिर में 36 कौम के किसानों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। 28 अक्टूबर को भोपालगढ़ विधानसभा की बैठक दाता साहेब छात्रावास में सम्पन्न हुई। चैन सिंह साथिन, मारवाड़ राजपूत सभा अध्यक्ष हनुमानसिंह खांगटा, पूर्व जिला प्रमुख प्रतिनिधि अरुण बलाई, एस.सी. मोर्चा के जिलाध्यक्ष रामलाल मेघवाल व पदमसिंह ओसियां ने बैठक को संबोधित किया। 30 अक्टूबर को ओसिया विधानसभा के केलावा मे पोस्टर विमोचन एवं जनसंपर्क किया गया। इस दौरान पाली लोकसभा क्षेत्र से सांसद पी.पी. चौधरी, पुर्व संसदीय सदस्य भैराराम सियोल, पुर्व विधायक कमसा मेघवाल, पुर्व प्रधान ज्योति जाणी, पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा

भोपाल सिंह बड़ला सहित अनेकों जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। इसी दिन ओसियां विधानसभा के बावड़ी स्थित राजपूत छात्रावास में तथा खवासपुरा, चौकड़ी कलां, चौकड़ी खुर्द और चामू में भी बैठक संपन्न हुई। 1 नवंबर को सेखाला में तथा 2 नवंबर को ओसियां स्थित शक्ति वाटिका में, तिंवरी स्थित रावतसिंह भोमियाजी के थान पर व बापिणी में बैठक हुई। 3 नवंबर को फलोदी के राईकाबाग क्षेत्र में स्थित राजपूत विश्राम गृह में और 6 नवंबर को बाप कस्बे के मेघराजसर तालाब पर बैठक हुई तथा ओसियां विधानसभा के पंडित जी की ढाणी, बैठवासिया, खिंदाखोर, तापु, बिरसालु, किंजरी, गिंगाला, सिल्ली, चिंदड़ी, धनारी, हतुंडी आदि गांवों में जनसंपर्क किया गया। 7 नवंबर को ओसियां विधानसभा के बारां कला व खुर्द, डावरा, मानसागर, जेतियावास, राकोरिया, चान्द्रख, उम्मादेसर, नादिया कला व खुर्द, हरढाणी, अणवाणा, केलावा कला व खुर्द, भवाद, नेवरा, बैगडीया, धुंधाडा आदि गांवो में और लोहावट विधानसभा के रामनगर, श्रीकृष्णनगर, चाडी, लक्ष्मणनगर, सियोलनगर, खारिया, रिडमलसर, गोरछिया बेरा, आऊ, सारनपुरा, हाजीसागर, सुवाप, इसरू, बेदू, भादा, किरताणीयों की ढाणी, मतोडा, पड़ासला, सावता, हनुमान सागर, निम्बोका तालाब आदि गांवों में जनसंपर्क किया गया। 8 नवंबर को ओसियां विधानसभा क्षेत्र के मथानिया, रामपुरा भाटियान, चौपासनी चारणान, रजासनी, बिंजवाडिया, बडला, बिजारिया बावड़ी, बड़ा कोटेचा, बासनी भाटियान, संतोड़ा, जेलू, मालुंगा-डिगाडी, गगाड़ी आदि गांवों में तथा भोपालगढ़ विधानसभा के रतकुड़िया, सरगिया, कागल, भुण्डाणा, मलार, पीपाड़ रोड, सिंधीपुरा आदि गांवों में जनसंपर्क किया गया। बैठकों के दौरान कार्यक्रम को भव्य व सफल बनाने की रूपरेखा तैयार की गई एवं अलग-अलग गाँवों की जिम्मेदारियां सहयोगियों को दी गई।

(पृष्ठ एक का शेष)

श्रेष्ठता के...

तब हमारी जिम्मेवारी और बढ़ जाती हैं। पूज्य तन सिंह जी ने ऐसे आदर्श संघ परिवार का निर्माण किया है, इस परिवार की भावनाएं लेकर हम हमारे उस परिवार को भी बनाने की बात करें। हमने एक अमृत रूपी जीवन यहां जीया है और इस अमृत रूपी जीवन को लेकर जब हम संसार में जाएंगे तो हमको रावण सामने खड़े मिलेंगे, कुंभकरण खड़े मिलेंगे, मेघनाद खड़े मिलेंगे। हमको इनसे लड़ना है और लड़ वही सकता है जो शक्तिवान होता है। लड़ वही सकता है जिसने शक्ति का संचय किया है। हमने इन सात दिनों में अनेकों प्रकार से उस शक्ति का संचय करने का प्रयास किया। मैं नहीं जानता कि आपने वह शक्ति कितनी अर्जित की है, लेकिन आपके चेहरे का जो तेज है वह सब बयां कर रहा है। आप यहां से वह तेज लेकर जा रहे हैं जो किसी भी गलत वस्तु का दहन कर सकता है, जला सकता है और हमारा भी दायित्व बनता है कि हम यहां से जाने पर उस तेजस्विता से संसार में जो भ्रष्टाचार फैला हुआ है, हमारे समाज में जो निराशा छा गई है, हमारे समाज में कचरे के रूप में जो कुछ जाले आ गए हैं, उनका नाश कर दें, उन्हें जला दें। यह हमारा दायित्व बनता है। दायित्व उन्हीं का बनता है, जो श्रेष्ठ होते हैं और भगवान ने हम को क्षत्रिय कुल में जन्म दिया है जो श्रेष्ठ कुल है और इस श्रेष्ठ कुल के बाद में हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ जैसी श्रेष्ठ संस्था दी। ऐसे श्रेष्ठ परिवार में आकर हम अपने आपको यदि उस तेजस्विता के तेज से संपन्न नहीं करेंगे तो फिर हमारा यहां आना व्यर्थ हो जाएगा। इसलिए संघ हमको बार-बार आगाह करता है कि जैसे ही हम इस पवित्र वातावरण से बाहर जाएंगे तो संसार अपना मालिन्य हमारे ऊपर बिखेरने का प्रयास करेगा। वहां जो कोयले की खान है उसका दाग हमारे ऊपर भी लगने की संभावना है। हमारा जो श्वेत धवल कमीज है कहीं यह काला नहीं हो जाए। हमने जो यहां प्राप्त किया है वह खो नहीं जाए, यह हमको ध्यान रखना है साथ ही हमको और लोगों को भी धवल बनाने का काम करना पड़ेगा। हम सात दिन ऐसे एकांत स्थान पर रहे हैं जहां पर पवित्रता थी, जहां यज्ञ था, जहां आपसी प्रेम था, जहां बंधुत्व था और यहां से संसार में जाएंगे तो इस सब के विपरीत सब कुछ मिलने वाला है। हम भी शायद वहां परेशान हो जाएं लेकिन हमें जिम्मेवारी भागना नहीं है। हमारी जिम्मेवारी तो 'युद्धे चाप्य पलायनम्' की है। हम उस चुनौती को स्वीकार करें। संसार में जो बुरे से बुरा घट रहा है उसको रोकने और हटाने की जिम्मेदारी हमारी है। हमारी ही क्यों जिम्मेदारी है? क्योंकि जो श्रेष्ठ लोग होते हैं उन्हीं की जिम्मेदारी होती है। भगवान ने हम को श्रेष्ठ कुल दिया है, तनसिंह जी ने हमको एक श्रेष्ठ मार्ग दिया है और ऐसे श्रेष्ठ मार्ग पर चलकर यदि हम लोगों को श्रेष्ठ मार्ग नहीं बताएंगे तो वह उस चुनौती से मुंह मोड़ना है। इसलिए यहां हमने उस शक्ति को उत्पन्न किया, उस तेज को उत्पन्न किया जिससे हम उस जिम्मेदारी को निभा सकें। यहां जो कुछ भी हमको कहा गया, जो कुछ भी हमें कराया गया, हमने धैर्यपूर्वक किया। हमने यहां त्याग भी किया, चुनौती को स्वीकार करने का साहस भी हमने दिखाया और अब वह ईश्वरीय भाव भी हमारे अंदर आना चाहिए कि मैंने जो कुछ प्राप्त किया है वह मैं इस संसार में जाकर बांट दूंगा। वह तेज जो मुझ में आया है, जो धैर्य और शौर्य आया है वह सब मेरे इस समाज को भी देने का प्रयास करूं। यह हमारा दायित्व है और इसी दायित्व बोध को प्राप्त करने के लिए हम यहां आए हैं। हो सकता है यहां से जाने के बाद विपरीत वातावरण के संपर्क में आकर हम भी वैसे ही बन जाएं, इसलिए उससे भी बचने का प्रयास करना है। हमारा दोहरा दायित्व है - हमको शिक्षण का काम भी करना है और हमको स्वयं को भी सुधारना है। हमारे ऊपर संघ का एक ऋण चढ़ गया है और उस ऋण को उतारने का एकमात्र उपाय यही है कि हम यहां से जाकर शाखाएं लगाएं, शिविरों में जाएं, अन्य लोगों को श्री क्षत्रिय युवक संघ से जोड़ें। यह हमारा प्रयास होना चाहिए और यदि हम यह कर पाते हैं तो पूज्य तन सिंह जी के संदेश को हम घर-घर तक पहुंचा सकेंगे।

समारोहपूर्वक...

और कहा कि ढूंढाड़ क्षेत्र के 12 जिलों में समाज के चतुर्मुखी विकास के लिए श्री राजपूत सभा रोजगार परक शिक्षण और प्रशिक्षण, विद्यार्थियों के लिए छात्रावास की सुविधा, महिला सशक्तिकरण व स्वरोजगार जैसे विषयों पर कार्य कर रही है। इस अवसर पर रक्तदान शिविर का भी आयोजन किया गया जिसमें 230 यूनिट रक्त का संग्रहण हुआ। कार्यक्रम के दौरान समाजसेवा, खेल, अध्ययन आदि विभिन्न क्षेत्रों में श्रेष्ठ कार्य करने वाली समाज की प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में श्री राजपूत सभा के पदाधिकारी, कार्यकर्ता और जयपुर शहर में रहने वाले समाजबंधु सम्मिलित हुए। बलवीर सिंह हाथोज ने सभी का आभार व्यक्त किया।

कर्त्तव्य का पालन...

इस सार्थकता को प्राप्त कराने के लिए ही संघ अपने आनुषंगिक संगठनों के माध्यम से यह कार्य कर रहा है। आप लोग इतनी संख्या में आए हैं, यह बहुत खुशी की बात है। आप सब लोग मिलकर काम करना प्रारंभ करें तो यह संख्या बहुगुणित होगी और तब हम बहुत कुछ कर सकते हैं। अभी प्रारंभिक अवस्था है इसलिए दिक्कतें आएंगी। हमने जो कुछ भी तय किया है उसमें भी बाधाएं आएंगी और हो सकता है कुछ विलंब भी हो लेकिन यह सब स्वाभाविक है। जब भी कोई व्यक्ति नया काम शुरू करता है तो बाधाएं आना स्वाभाविक है। इसमें कोई डरने की और चिंता की बात नहीं। आज नहीं तो कल काम पूरा होगा लेकिन हमारी तत्परता बनी रहे, हमारी निरंतरता बनी रहे तो सब कुछ ठीक होगा और वह सार्थक जीवन बनाने की, सोते हुए जीवन को जगाने की बात पूरी हो सकती है। ऐसा करते हुए हमारे व्यक्तिगत अरमान हमें स्वाहा करने पड़े तो उसकी परवाह नहीं करें। समाज का काम होना चाहिए, यह जीवन सार्थक होना चाहिए। जिस काम के लिए भगवान ने मुझको जन्म दिया है वह काम मैं करके जाऊं, बस यह भाव बराबर बना रहे। उपर्युक्त बात माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी ने 29 अक्टूबर को संघशक्ति में श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन द्वारा आयोजित आईटी प्रोफेशनल्स के स्नेह मिलन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि संघ और उसके आनुषंगिक संगठन कई प्रकार के काम कर रहे हैं। सभी जिलों में किसान सम्मेलन हो रहे हैं। गांव में हम लोग रहते हैं, वहां हमारे समाज के खिलाफ दुष्प्रचार करने वाले, हमारे खिलाफ जहर उगलने वाले चारों तरफ भरे पड़े हैं और इसलिए गांव में जो पिछड़ी जातियां हमारे सबसे अधिक निकट थी उनमें भी जहर घोला जा रहा है। इसे रोककर कैसे सबको पुनः इकट्ठा किया जाए, इसी चिंतन का परिणाम है किसान सम्मेलन। कृषि ऐसा कार्य है जो सभी समाजों को आपस में जोड़ता है। इसलिए हम सब किसान हैं अतः हम सब एक साथ बैठकर संवाद करें, कोई समस्या या विवाद हो तो संवाद से हल करें। इस प्रकार के भाव के प्रसारण से लोगों में सौहार्द बढ़ेगा तो गांव का भी विकास होगा और हमारे समाज के प्रति भी लोगों की भावना अच्छी बनेगी। आज जब हमारे विरुद्ध इतना दुष्प्रचार हो रहा है, उस स्थिति में भी यह जो किसान सम्मेलन हुए हैं उनमें सभी समाजों के प्रतिनिधि यह कह रहे हैं कि हमारा कोई सहायक है तो वो राजपूत ही है। यह भाव अभी भी मौजूद हैं, उसको मजबूत करना है। इसी प्रकार अधिकारी वर्ग को भी साथ लेकर कार्य किया जा रहा है। राजनीतिक क्षेत्र में भी अलग-अलग दलों के लोगों से संवाद किया जा रहा है और राजनीति में सक्रिय हमारे समाज की युवा पीढ़ी के मार्गदर्शन का कार्य भी किया जा रहा है। वकीलों से, चिकित्सकों से भी अलग से मिलकर संवाद किया जा रहा है। सार की बात यह है कि हमारा आपसी मेल बना रहे। हम एक हैं, एक ही मां की संतान हैं, हम चाहे कहीं भी कार्य कर रहे हों, कहीं भी रह रहे हों लेकिन हम एक ही परिवार के हैं, यह भाव हमारा बना रहे। इस भाव को मजबूत बनाने के लिए यह सब प्रयास किए जा रहे हैं। साथ में बैठने पर ही यह पता चलता है कि हमारे में बहुत क्षमता है लेकिन उस क्षमता को हम काम में नहीं ले रहे हैं। इसीलिए ये प्रयास किए जा रहे हैं। अब यह आपका दायित्व है कि यह प्रयास कितने और कितनी शीघ्रता से सफल हों। जितना ज्यादा हम सामाजिक भाव रखकर चलेंगे उतनी ही अधिक सफलता मिलेगी। बाधाएं निश्चित रूप से आएंगी। श्री क्षत्रिय युवक संघ जब से प्रारंभ हुआ है तब से विरोध भी होता रहा है और वह भी किसी अन्य ने नहीं हमारे ही समाज के लोगों द्वारा किया गया लेकिन संघ धीरज के साथ संस्कार निर्माण का कार्य करता जा रहा है। इसलिए आप भी बाधाओं की चिंता किए बिना आगे बढ़ते रहें। इससे पूर्व श्री क्षत्रिय युवक संघ के केन्द्रीय कार्यकारी (आनुषंगिक संगठन) रेवंत सिंह पाटोदा ने फाउंडेशन के उद्देश्य और कार्यप्रणाली के बारे में बताया और कहा कि हमारे समाज में व्यवस्था के प्रति एक नकारात्मक वातावरण बना हुआ है और व्यक्ति जब नकारात्मक ढंग से सोचने लग जाता है तो उसकी ऊर्जा विध्वंसक बन जाती है। इसी चिंता को लेकर श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन बना। हमारी नकारात्मकता हमारे भीतर निराशा पैदा कर रही है और उस निराशा के कारण हमारी अधिकांश ऊर्जा नकारात्मक साधनों की ओर प्रवाहित हो रही हैं। उसको किस प्रकार से सकारात्मक रूप दिया जाए, इसी दृष्टिकोण को लेकर जनवरी 2019 में फाउंडेशन का गठन हुआ। इसका मूल उद्देश्य है कि समाज के युवाओं की ऊर्जा को संयोजित करके उसे समाज हित में प्रयोग किया जाए। इसके लिए विभिन्न क्षेत्रों में फाउंडेशन द्वारा कार्य किया जा रहा है। लेकिन यह कार्य नियमितता और निरंतरता की मांग करता है और उसके लिए एक निश्चित शिक्षण की आवश्यकता होती है। वह शिक्षण श्री क्षत्रिय युवक संघ प्रदान करता है इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ ही श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन की प्रेरणा का आधार है और जो फाउंडेशन के माध्यम से संघ की मुख्यधारा से जुड़ते हैं वही फाउंडेशन का काम भी नियमित रूप से कर पाते हैं। बैठक में देश के विभिन्न राज्यों से सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में काम करने वाले समाज के युवा सम्मिलित हुए। इस क्षेत्र में कार्यरत युवाओं की ऊर्जा किस प्रकार से समाज हित में प्रयुक्त हो सकती हैं और उसमें वे किस प्रकार से सहयोगी बन सकते हैं, इस पर बैठक के दौरान चर्चा की गई। बैठक में घनश्याम सिंह निंबोल, कैलाश सिंह भाटी, नरेंद्र सिंह सोलंकी, संग्राम सिंह, मनिंद्र सिंह गोला, महावीर सिंह, प्रदीप सिंह, शिवराजसिंह, कमलजीत सिंह, भवानी सिंह, जितेन्द्र सिंह, देवराजसिंह, सुरेंद्र सिंह, जयराज सिंह, भंवरप्रताप सिंह आदि अनेक प्रोफेशनल्स ने अपने विचार साझा किए। बैठक का संचालन पवनसिंह बिखरणिया व विजय सिंह लालासर ने किया।

श्री राजपूत सभा का स्वच्छता एवं वृक्षारोपण अभियान

30 अक्टूबर को श्री राजपूत सभा जयपुर द्वारा स्टेच्यू सर्किल परिसर में स्वच्छता ने वृक्षारोपण का अभियान चलाया गया। सभा के अध्यक्ष राम सिंह चंदलाई ने बताया कि जयपुर के संस्थापक सवाई जय सिंह जी की जयंती से पूर्व उनकी स्मृति में आयोजित इस अभियान में जयपुर नगर निगम ग्रेटर से भी पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ, साथ ही समाजसेवी संस्था 'टीम प्रयास' के सदस्यों ने भी सहयोग किया। एक्स सर्विसमैन लीग, जयपुर के संरक्षक अर्जुन सिंह राठौड़ सहित कई गणमान्य सज्जन इस अवसर पर उपस्थित रहे।

भोम सिंह डीगड़ा का देहावसान

भोम सिंह डीगड़ा

श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक **भोम सिंह डीगड़ा** का देहावसान 4 नवंबर 2022 को हो गया। उन्होंने अपने जीवनकाल में संघ के पांच उच्च प्रशिक्षण शिविर, चार माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर, चार प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर तथा पांच विशेष शिविर सहित कुल 19 शिविर किए। आकोडा में 16 से 19 सितंबर 1999 तक आयोजित शिविर उनका प्रथम शिविर था। पथप्रेरक परिवार दिवगंत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है और शोक संतप्त परिजनों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता है।

समस्त नवचयनित सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

गोपाल कृष्ण सिंह आवाय (कम्प्यूटर अनुदेशक)

मग सिंह राजमथाई (अध्यापक)

अनवर सिंह म्याजलार (अध्यापक)

देवेंद्र सिंह सांखला (अध्यापक)

मानवेन्द्र सिंह केरालिया (अध्यापक)

नटवर सिंह झिंझनियाली (शारीरिक शिक्षक)

विक्रम सिंह रामदेवरा (शारीरिक शिक्षक)

भंवर कँवर W/0 स्वरूप सिंह दवाड़ा (अध्यापिका)

अजयपाल सिंह S/0 रतन सिंह बडोडा गांव (पटवारी)

पृथ्वीपाल सिंह S/0 नरपतसिंह राजगढ़ (केन्द्रीय विद्यालय की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में 5 किमी दौड़ा में गोल्ड मेडल)

शुभेच्छुः

गणपत सिंह अवाय	सांवल सिंह मोढ़ा	भवानी सिंह मुंगेरिया	तारेंद्र सिंह झिंझनियाली	उम्मेद सिंह बडोड़ा गांव
अमर सिंह रामदेवरा	भोजराज सिंह तेजमालता	खंगार सिंह झलोड़ा	गोपाल सिंह केरालिया	स्वरूप सिंह नेड़ान
रणजीत सिंह चौक	बाबू सिंह सोनू	महिपाल सिंह तेजमालता	यशपालसिंह राजगढ़	धर्मपाल सिंह आसकन्दरा
स्वरूप सिंह दवाड़ा	लूण सिंह बड्डा	दीप सिंह राजगढ़	नरपत सिंह लूणा	भोपाल सिंह झलोड़ा	मनोहर सिंह टावरिवाला

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाषः 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org